ता

सुनहरे सिद्धान्त

GOLDEN LAWS

OF

SUCCESS

सफलता के सुनहरे सिद्धान्त

GOLDEN LAWS OF SUCCESS

By

प्रोफैसर 'देव'
डबल एम. ए.
एम. एस-सी. (हाम्यो),
एम. डी. एच., साईकालोजिस्ट
एण्ड साईकियेट्रिस्ट

प्रकाशक :
कुलदीप सिंह 'डारी'

मिलने का पता :
इन्द्र सिंह एण्ड सन्ज, माडरन कन्फैक्शनर,
अप्पर बाज़ार कालका (हरयाना]

Price Rs. 2/-

प्रकाशक :
कुलदीप सिंह 'डारो'

मिलने का पता :
इन्द्र सिंह एण्ड सन्ज, माडरन कन्फैक्शनर
अप्पर बाजार, कालका,
(हरयाना)

प्रिंटर :
मुद्रक देव राज खुल्लर,
दौलत प्रेस, गोकल रोड, लुधियाना
(फोन 684)
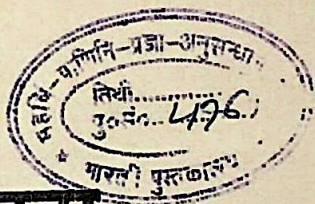
सफलता के सुनहरे सिद्धान्त

GOLDEN LAWS OF SUCCESS

उदगार

हस्त-लिखित कापी पढ़ने वाले एवं मेरा Lecture सुनने वाले एक विद्वान के :

यूं तो मैं ने अनेकों लैक्चर सुने हैं और अनेक प्रकार को पुस्तकों का अध्ययन किया है। परन्तु प्रो. 'देव' के लैक्चरज एवं इस हस्त-लिखित पुस्तक ने मुझे अनिर्वचनोय, अकथनीय प्रेरणा दो है। जी चाहता है इस पुस्तक को बार बार पढ़ता रहूं। इस पुस्तक से मुझे एक नई एवं अद्भुत प्रेरणा मिली है।

आज के मानव के लिये इस प्रकार का साहित्य-अति आवश्यक है। आज गन्दे उपन्यास और गन्दा साहित्य भारत के युवक-युवतियां को पतन को ओर धकेल रहा है। युवक-युवतियां अनेक प्रकार के रोगों में ग्रस्त हैं। गन्दा साहित्य पढ़ने से मन दुषित होता है और दुषित मन ही सब व्याधियों, असफलताओं की जड़ है।

प्रोफैसर साहब ने जो कुछ लिखा है वह उन के जीवन में चिरतार्थ हो रहा है इस लिये मैं तो यह कह सकता हूं कि यह पुस्तक प्रो. साहब के अनुभवों का निचोड़ है।

मुझे पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक आधुनिक पढ़े लिखे मानव को सफलता का मार्ग दर्शायेगी और जीने की कला सिखायेगी। इस पुस्तक की सब से बड़ी विशेषता यह है कि जहां प्रोफैसर साहब ने (Theoratically) थ्योरेटिकली सफलता से मार्ग का दिग्दर्शन कराया है वहां संक्षिप्त शब्दों में (Practical Path) क्रियात्मक-पथ का भी वर्णन किया है। इस पुस्तक का स्वाध्याय निश्चय ही पाठकों को एक नई राह दिखायेगा।

बी. पी. शास्त्री
लुधियाना

प्रिय भाईओ और बहनों !

यदि आप :

सफलता के सिद्धान्त जानना चाहते हैं !

जीने की कला जानना चाहते हैं।

निराशा की काली निशा से बचना चाहते हैं।

अपना चहुमुखी विकास चाहते हैं।

अपनी खोई हुई शक्तियों का जागरण चाहते हैं।

अपने स्वरूप को पहचानना चाहते हैं।

रोगों के आक्रमण से बचना चाहते हैं।

स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन एवं स्वस्थ आत्मा चाहते हैं।

तो इस पुस्तक का बार बार स्वाध्याय कीजिए, पुस्तक की शिक्षाओं एवं प्रेरणाओं को अपने मन की प्लेट पर लिख लीजिए फिर जो चाहोगे, वहा मिलेगा।

'देव'

दो-शब्द

उर्दू के एक अनुभवी कवि ने कहा है :

सभी कुछ हो रहा है
तरक्की के ज़माने में।
मगर गज़ब यह है कि
आदमी इनसान नहीं होता।

इन्सान बनता है विचारों से। जैसे विचार मिलेंगे वैसे ही मनुष्य बनेगा। आज का युग (Three P's') तीन 'P' का युग है (Politics) पालिटिक्स, (Power) पावर तथा (Pessim:sm) निराशावाद।

जब किसी व्यक्ति को पावर नहीं मिलती तो वह निराश हो जाता है। आज गरीब और अमीर, शिक्षित और अनपढ़ मानव के ऊपर निराशावाद के बादल गर्ज रहे हैं। आज के इस भौतिक प्रकाश के युग

में मानव निराशवाद के अन्धकार में भटक रहा है। ज्यों ज्यों (Clinic Centres) कलोनिक सैन्टरज बढते जा रहे हे, त्यों त्यों रोग भी बढते जा रहे हैं। इस लिये आज के युग को सब से बड़ी मांग इञ्जीनीयर, डाक्टर, पलीडर और लोडर नहीं है। आज के युग कों प्रबल मांग है (Inspirers) प्रेरक।

इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों को नई प्रकाशकिरन मिलेगो, निराशा की काली निशा ओझल हो जायेगो। आशाओं का चमचमाता सूर्य उदय होगा, पाठक अपनो खोई हुई शक्तियों को पहहानेंगे, सफलता की सच्ची राह को जानेंगे।

पुस्तक के अनुसार आचरण करने वाले पाठक इस सुन्दर, सुहावने एवं मधुर संसार के तथा जीवन के मधुर फलों का आस्वादन करने में समर्थ होंगे। मेरे जीवन का मिशन, अपने आप को उठाना और गिरे हुये को उठाना है। इस मिशन की पूर्ती के लिये मैं ने अपनें कुछ विचार प्रकट किये हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि पुस्तक के पढ़ने के पश्चात पाठकों के सामने सच्चाई सार आयेगा और पाठकों के जीवन में एक नया मोड़ आयेगा; नया व्यक्तित्व जन्म लेगा।

'देव'

भूमिका

साईकालोजी (मनो-विज्ञान) विचार-शक्ति पर बल देता है। विचारों से ही मनुष्य महान बनता है और विचारों से ही नीच वन जाता है। उच्च विचार मनुष्य को उच्च बना देते हैं और नीच विचार मनुष्य को नीच बना देते हैं। विचार कायर को शूरवीर, साधारण को असाधारण बनाने की जादू भरी शक्ति रखता है। विचारों का मानव मन पर एक दम प्रभाव होता है। जोशीले विचारों को सुन कर जोश आ जाता है, कामुक विचारो से काम वासना भड़क उठती है। विचार मानव जगत में बहुत बड़ा पार्ट अदा कर रहा है।

भगवान् कृष्ण ने विचारों के द्वारा ही अर्जुन की उदासीनता दूर की थी। भगवान् कृष्ण के प्रभावशाली विचारों को सुन कर हतोत्साहित, मोह–जाल में उलझा हुआ अर्जुन एक बलवान योद्धा बन गया था। भगवान् कृष्ण के विजयी विचारो ने अर्जुन को विजेता बना दिया था। दशम पादशाह गुरू रोबिंद सिंह जी महाराज ने कहा था कि :

'स्वा लाख से एक लड़ाऊं।'

और उस महान् गुरू ने लड़ा कर दिखा दिया। लेकिन लड़ने वाले कौन थे? आप सब को पता है कि वे साधारण व्यक्ति थे, साधारन परीवारों में पैदा हुये थे, लेकिन गुरू जी के प्रभावशाली विचारों गे उन साधारण सैनिकों को आसाधारण जरनैल बना दिया था।

कहते हैं कि एक बार ईसा मसीह (Christ) नदी के तट पर घूम रहे थे। उन्हों ने देखा कि कुछ मच्छलियां हकड़ने वाले मच्छलियां पकड़ रहे थे। ईसा मसीह

(Christ) ने पूछा What are you doing ? मच्छलियां पकड़ने वाले ने उत्तर दिया 'We are catching fishes' हम मच्छलियाँ पकड़ रहे हैं। ईसा मसीह ने फिर उन से कहा 'Come along with me, and I will teach you, how to catch the man' आओ मेरे साथ! मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि मनुष्य को कैसे पकड़ा जाता है। वे लोग क्राईस्ट के साथ चले गये। क्राईस्ट ने उन मच्छलियां पकड़ने वालों को अपनी महान् विचार-धारा से महान् बना दिया।

स्वामी विवेकानन्द अपनी प्रबल विचार-धारा से ही भारतीय समाज में प्राण का संचार किया था। स्वामी दयानन्द जैसे विचारकों ने अपनी विचारधारा से भारत के इतिहास में एक उथल-पुथल मचा दी थी। अतः यह नितान्त सत्य है कि विचार ही मनुष्य पर शासन करता है। एक विचारक ने लिखा है कि–

"The greatest discovery of my age is that human beings can alter their lives by altering their attitude of mind". (William James)

अर्थात् मेरे युग की सब से महान खोज यह है कि सभी मनुष्य अपनी मनोवृति को बदल लेने से अपने समुचे जीवन को बदल सकते हैं।

Strong, pure, healthy and happy thoughts make man strong, pure, healthy and happy one.

(Dev)

सुदृढ़, पवित्र, स्वस्थ और परसन्नता सब विचार मनुष्य को सुदृढ़, पवित्र स्वस्थ एवं प्रसन्न बनाते हैं।

—देव

इस युग का प्रत्येक व्यक्ति और कुछ चाहे या न चाहे; परन्तु वह सफलता, उन्नति, एंव विकास अवश्य चाहता है। मैंने भारत के बहुत से भागों का भ्रमण किया है। अनेकों स्कूल, कालेज एंव संस्थाओं में लैकचरज़ दिये हैं। प्रायः मैं अपने लैक्चर में पूछ लिया करता हूं, कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति या विद्यार्थी भी है, जो सफलता नहीं चाहता? सभी विद्यार्थियों एंव श्रोताओं के सिर नकरात्मक संकेत करते हुए डुगडुगो की तरह हिल जाते है। हां मुझे याद आ गया, मैं एकबार एक कालेज में बोल रहा था; जब मैंने उपरोक्त प्रश्न पूछा, सब से पोछे बैठे हुए एक कालेजियट ने बड़े जोर से चिल्लाते हुए कहा "Sir ! I want Failure". मेरे पास बैठे हुए प्रिंसिपल महोदय ने कहा, प्रोफेसर साहब आप आपना लैक्चर जारी रखिये; क्योंकि यह लड़का अमृतसर के पागल खाने

से आया हैं; इसके माता पिता यहां भेज देते हैं। यह अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है। इसी लिये कभी कभी तो यह कालेज के किसी न किसी लड़के को पीट भी देता हैं। मतलब वह एक पागल विद्यार्थी था। जिसका दिमाग थोड़ा सा सेन्टर में है, वह कभी भी नहीं कहेगा कि उसको असफलता चाहिये।

यह बात तो निर्विवाद सच है; कि हम सभी अपने कार्य में सफलता चाहते हैं। परन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या सभी को सफलता मिल सकती है ? मेरा यह पूर्ण विश्वास है, कि जिस मनुष्य के सभी अंग स्वस्थ एंव पूर्ण है, उसको निश्चय हो सफलता मिलती है। सफलता प्राप्त करना उन्नति करना, आगे बढ़ना प्रत्येक बालक बालिका एंव स्त्री पुरुष का जन्म सिद्ध अधिकार है। उस (सुप्रीम पावर) सर्व शक्तिमान परमात्मा ने हमे मानव शरीर इसी लिये दिया है, कि हम अपनें जीवन को सफल बनायें, नहीं तो वह हमें किसी गाय, घोड़े, गधे, कुते आदि की योनि में

डाल देता जैसे हमारे संसारिक माता पिता हर समय हमारी लफलता को शुभ कामना करते हैं, वैसे ही, इन से भी कहीं अधिक वह सब का एक मात्र सर्वदा रहने वाला पिता–परमात्मा हर समय हमारी सफलता एवं विकास की शुभ कामना ही नहीं करता अपितु हमें सफलता के लिये प्रेरित करता है। और अपने आर्शीवाद की वर्षा भी हम पर करता रहता है। सफलता प्राप्त करना, आगे बढना हम सबको (birth --right) जन्म सिद्धि अधिकार दिया है।

संस्कृत के ग्रन्थों में कहा है 'उद्यानं ते पुरुषं नावयानम्' इसी को अंग्रेज़ी जानने वाले विद्वानों ने यूं कहा है "O man ! Thou art born to risth not to fallth" ऐ मानव ! तू ऊपर उठने के लिये, विकास करने के लिये। सफलता प्राप्त करने के लिये उत्पन्न हुआ है। नीचे गिगने एवं असफलता के लिये नहीं। वह प्रभु तो हमें सफलता देने के लिये हर समय तैयार रहता है, उस का द्वार हर समय हमारे लिये, मानव मात्र के लिये खुला रहता है। क्राईस्ट ने भी एक

स्थान पर कहा है "Ask, and it shall be given to you, seek and ye shal find' अर्थात् किसी वस्तु के लिये प्रार्थना कीजिये वह तुम को मिलेगी, अपनी प्रिय वस्तु को खोज कीजिये वह तुम को आवश्य मिलेगी।

अनेकों महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ने के पश्चात् तथा आपने निजि अनुभव के आधार पर मैं इस निर्णय एवं निश्चय पर पहुंचा हूं कि मनुश्य में असरंव्य (Faculties) शक्तियां हैं। या यूं कहिये कि मनुश्य के मस्तिष्क में असरव्यं बीज पड़े हुए हैं, जैसा वातावरण मिलता है वैसे ही बीज विकसित हो जाते हैं। मनो-विज्ञान के बहुत बड़े विद्वान डा: कारल जुन्ग (Dr. Carl Jung) ने भी लिखा है (Every man has with in him something of the criminal, the genius and the saint") अर्थात् प्रत्येक मनुष्य, आपराधी भी बन सकता है बुद्धिमान एवं विद्वान तथा महापुरुष भी बन सकता है। मैं किसी भी बालक को तीन मास के प्रशिक्षण के पश्चात् एक डाकू भी बना सकता हूं उस की (dulness–मूर्खता)

को दूर करके, उसके मस्तिष्क को (fertile) उपजाऊ भी बना सकता हूं।

'History of the World' विश्व का इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि अनेकों (Sinners) पापी, (Saints) सन्त बन गये। कालिदास जैसे बज्जर मूर्ख चोटी के विद्वान बन गये। अत: यह बात नितान्त सत्य है कि मनुष्य जैसा चाहे, वैसा बन सकता है, वह जो चाहे उसे प्राप्त कर सकता है। मार्कुस आरुलियस (Marcus Aurelius) ने भी लिखा है "A man is what he thinks about all day long. A man's life is what his thoughts make of it?" अर्थात् मनुष्य वही कुछ बनता है जो वह दिन भर सोचता है। मनुष्य का जीवन वैसा ही बनता है जैसे उसके विचार होते हैं अंग्रेजी के विद्वान ने भी लिखा है 'As a man thinkleth, so he becometh' एक व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसे ही वह बन जाता है। मैं विचार शक्ति में विश्वास करता हूं। अंग्रेजो के महान विद्वान कार-लायल (Carlyle) 'ने लिखा है "Thought

is matrix into which man is moulded" विचार एक सांचा है जिस में मनुष्य को ढाला जाता है ।

मैं ऊपर लिख चुका हूं कि सभी प्रकार के विचार, गुण और दोष, बीज रूप में मानव मस्तिष्क में विद्यमान हैं। मैं इस 'seed theory' बीज के सिद्धान्त को एक साधारण सा उदाहरण दे कर पाठकों को समझाना चाहता हूं।

एक स्कूल में एक अध्यापक पढ़ाता है, वह दो विद्यार्थियों— राम और श्याम को अपने पास बुलाता है और अपनी जेब से एक पैकेट निकाल कर, आधे बीज राम के हाथ पर रख देता है और आधे बीज श्याम को दे देता है। फिर वह अध्यापक कहता है 'देखो बेटा ! राम और श्याम ध्यान से सुनो। ये बीज गुलाब के फूलों के हैं। तुम अपने अपने घर पर जा कर अपनी अपनी बयारी तैयार करना। फिर ये बीज उन बयारियों में बखेर देना। उस के बाद पानी देना, फिर गोडी करना और फिर खाद देना। बार बार इस ढंग को अपनाने से इन

बीजों के अंकुर बन जाएंगें। अंकुर से पौदे बनेंगे और फिर उन पौदों पर गुलाब के फूल लगेंगे। फिर तुम ने अपना अपनी क्यारी का नाम रखना (Ram's Rose Garden) राम की गुलाब वाटिका तथा (Shayam's Rose Garden) श्याम की गुलाब वाटिका।

छुट्टी मिलते ही राम और श्याम अपने अपने काम में लग गये, दोनो के घर पास पास थे। दोनों ने अपनी अपनी क्यारियाँ तैयार की और जैसा अध्यापक महोदय ने कहा था, उन क्यारियों में बीज भी बिखेर दिये इतने में सांझ के छः बज चुके थे, गली में से मोहन और सोहन जा रहे थे, मोहन और सोहन ने जोर से चिल्ला कर कहा Hallo Mr. Ram and Shayam हेलो राम और श्याम छः बज चुके हैं पिक्चर का टाइम हो चुका है। बहुत ही मजेदार रंगा रंग पिक्चर है, दर्शकों की भीड़ लगी हुई है, फिर टिकट नहीं मिलेगा" राम ने सोचा पिक्चर तो फिर भी देखी जा सकती है; और यदि नहीं भी देखी तो

कौनसा आसमान तो नहीं टूट पड़ेगा, पहले काम फिर खेल ! आप जाईये मैं नहीं जाऊंगा' राम ने कहा । श्याम लापरवाह था । उसने सोचा पता नहीं कल समय मिले न मिले, और यदि समय भी मिल गया, तो यह रंगा रंग पिक्चर रहे न रहे । इस लिये जोर से कहा (O K.) ओ. के. मोहन और सोहन 'मैं अभी आ रहा हूं' यह कह कर अपने कार्य को बीच में छोड़ माता पिता के मना करने पर भी श्याम ने साईकल उठाई और सिनेमा का द्वार जा खटखटाया । यह मन की प्रकृति का सिद्धान्त है कि उसको एकबार थोड़ी सी ढील दो, तो बाकी वह अपने आप ही ले लेता है । उसके बाद श्याम तो भूल गया क्यारी को । लेकिन राम अपने अध्यापक के आदेशानुसार लगा रहा । परिणाम स्वरुप एक दिन आया कि राम की क्यारी के वे बीज पौधे बन कर लहलहा उठे और उन पर गुलाब की कलियां एंव फूल मुस्काने लगे, लेकिन श्याम की क्यारी बिल्कुल खाली पड़ी थी

प्रिय पाठको ! आप ने ऊपर पढ़ा कि बीज तो दोनों ने बिखेरे थे, दोनों की क्यारियों में एक जैसे बीज थे। परन्तु श्याम की क्यारी के बीज जल कर खाक मे मिल गये, और राम की क्यारी गुलाब के फुलों से महक उठी।

प्रिय पाठको ! अब आप की समझ में भली भांति आ गया होगा कि हमारे मस्तिष्क में सभी प्रकार के बीज हैं जो ध्यान पूर्वक सावधानी से परिश्रम करता है, वह अपने बीजों को राम का तरह उगा लेता है और जो कुछ वह बनना चाहता है, बन जाता है।

योग एवं साईकालोजी का बिद्यार्थी होने के नाते मेरा पूर्ण विश्वास है कि "Man is basically dreamer" अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति स्वप्न लेता हैं, हम सब सपने लेते हैं, हममें से कोई डाक्टर बनने के सपने लेता है तो कोई इन्जीनियर बनने के सपने लेता है, कोई बहुत बड़ा बिजनसमैंन बनने के सपने लेता है। आप कहेंगे कि सपने तो हम सभो लेते हैं परन्तु वे संपने

साकार नहीं होतें, हमारी सभी इच्छाएं पूर्ण नहीं होतीं। क्या कोई ऐसा भी मार्ग अथवा नुसखा है जिस के अपनाने एवं सेवन करने से हम अपने सपनों को पूरा कर सकें?

प्रिय पाठक गण! निराश होने की आवश्यकता नहीं है। विश्व में कोई भी चीज़ असम्भव नहीं, जो काम औरों ने किये हैं वे कार्य हम भी कर सकते हैं। हम भी अपने सपनों को साकार कर सकते हैं, हम भी अपनी इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं। आप पूछेंगे कैसे? मैं ने अपनी रिसर्च से एक फिलासफी निकाली है जिसका नाम है "Dev's Philosophy" मैं अपने अनुभव तथा रीसर्च के आधार पर यह दावे से कह सकता हूं कि जब व्यक्ति Dreamer से Doer बन जाता है तब वह अपने सपने को साकार कर लेता है। निम्नलिखित उदाहरण से आप लोग मेरे साथ सहमत हुये बिना न रह सकोगे।

प्रिय पाठक गण! आप ने अब्राहिम लिंकन का नाम तो सुना ही है। अब्राहिम लिंकन भी हमारी तरह एक (Dreamer)

सपने लेने वाला था। उस ने लफल एवं महान बनने का सपना लिया।

एक दिन लिंकन ने अपने पिता से कहा, पिता जी मैं भी अन्य लड़कों की भांति पढ़ना चाहता हूं, पिता ने कहा, बेटा तुम पागलों जैसी बातें क्यों करते हो ! क्या तुम नहीं जानते कि मैं एक गरीब कारपेंन्टर हूं; और इस पर मुझे एक स्थान पर रहने का अवसर नहीं मिलता। मुझे जिस जिस नगर में दिहाड़ी पर कार्य मिलता है वहां जाना पड़ता है, और साथ में तुमको भी जाना पड़ता है। अब तुम ही बताओ बेटा ! इस प्रकार स्थान स्थान पर घूमने वाले गरीब मजदूर का बच्चा कैसे पढ़ सकता है ?"

"कुछ भी हो पिता जी मैं अवश्य पढ़ूंगा" लिंकन ने विश्वास पूर्वक कहा. लिंकन ने अपने निश्चय के अनुसार पढ़ना आरम्भ कर दिया, प्रिय पाठक गण ! आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस लिंकन की जीवनी लिखने वाले लेखक ने लिखा है कि अब्राहिम लिंकन को अपने

मित्रों से पुस्तक उधार लेने के लिये 15-15 मील पैदल चलना पड़ता था। वह (Dreamer) सपनें लेने वाला (Doer) कर्ता बन गया, जिसके परिणाम स्वरुप उसने अपने सपनों को साकार किया और एक मजदूर गरीब का बेटा अमेरिका जैसे देश का प्रेसिडेन्ट बना।

विश्व के इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं, परन्तु अमेरिका निवासी एक अन्य महापुरुष का वर्णन किये बिना नहीं रह सकता। वह महान पुरुष जेम्ज कार-फिल्ड था, जिस के बारे में हम भारतवासी बहुत कम जानते है। जेम्ज कार-फिल्ड भी एक मजदूर का बच्चा था अभी जेम्ज की आयु नौ वर्ष की थी, कि उसके गरीब पिता की मृत्यु हो गई। अब जेम्ज को उस छोटी सी आयु में अपना और अपनी विधवा माता का पेट भरने के लिये एक कारखाने में कार्य करना पड़ता था। जेम्ज ने भी ऊंचे सपने लेने आरम्भ कर दिये थे। एक दिन जेम्ज ने कारखाने में जाते समय कुछ

लड़कों को स्कूल में जाते हुए देखा । जेम्ज ने अपने साथियों से पूछा "ये कौन हैं और कहां जाते हैं ? उस के मजदूर साथियों ने बताया कि ये सब अमीरों के बच्चे हैं और स्कूल में पढ़ने के लिए जा रहे हैं । तब तो मैं भी पढ़ूंगा जेम्ज ने कहा । जेम्ज की भोली-भाली बातें सुन कर उस के साथी मुस्कराने लगे और कहा 'गरीब मजदूर के बच्चे को ऐसा नहीं कहना चाहिये ।' रात को जेम्ज घर लौटा और अपनी मां से कहा 'मां ! मैं भी पढ़ूंगा ।' 'तुम कैसे पढ़ोगे बेटा ! तुम्हारी मां विधवा तथा निर्धन है' मां ने कहा ।

'तो फिर क्या हुआ मां ? मैं तो अवश्य पढ़ूंगा! अवश्य पढ़ूंगा!! अवश्य पढ़ूंगा !!!' अपने दृढ़ निश्चय के अनुसार जेम्ज ने पढ़ना आरम्भ कर दिया । यह अमरीका का वह युग था जब प्रत्येक गरीब के बच्चे को छोटी अवस्था में सोलह सत्रह घण्टे कारखाने में कार्य करना पड़ता था । जेम्ज कार्य से तो नहीं घबराता था परन्तु उस को प्रतिः दिन बारह मील का सफर तय करना

पड़ता था उस कारखाने में जाने के लिये। इस लिए आने-जाने में भी तीन चार घण्टे लग जाते थे।

उस को पता लगा कि उस के घर से कुछ दूरी पर एक (Agriculture Farm) खेती-बाड़ी का फार्म है जिस में एक मजदूर की आवश्यकता है। जेम्ज ने समय बचाने के लिये उस फार्म में नौकरी कर ली। जेम्ज की जीवनी-लेखक ने लिखा है कि उस फार्म में रहते हुए, काम करते हुए जेम्ज रात को पढ़ा करता था। जब जेम्ज की विधवा मां की आखें खुलती थीं तो जेम्ज को पढ़ता हुआ पाती थी। विधवा मां सर्दी से ठिठुरते हुए जेम्ज के ऊपर अपना गाऊन डाल देती थी। वहां कार्य करते हुए जेम्जके जीवन में एक और परीवर्तन आया।

एक दिन की बात है कि जेम्ज सोलह घण्टे कार्य करने के पश्चात् थक कर चूर चूर हो गया था और छुट्टी मिलने पर अपने घर की ओर चलना ही चाहता था कि उस को गगन चुम्बी बिलडिंग से एक आवाज सुनाई दी। आवाज तो बड़ी कोमल थी

लेकिन शब्द बड़े कठोर थे। जिमींदार की लड़की ने कहा था "O Bought Slave Come Here" अर्थात् 'ओ खरीदे हुए गुलाम यहां आओ'। यह शब्द सुन कर जेम्ज के तन बदन में आग लग गई। यद्यपि आज तक जेम्ज ने किसी को भी नकारात्मक उत्तर नही दिया था। परन्तु उस दिन वह बिना कुछ उत्तर दिये अपने घर पर आ गया, खाना नहीं खाया, रात भर जेम्ज नहीं सोया। मां ने पूछा 'बेटा! क्या बात है, न तो तुम ने खाना ही खाया है और न तुम आज अपनी किताबें ही पढ़ रहे हो और न ही तुम को नींद आ रही है; क्या कारण है बेटा? कहीं तुम को बुखार तो नहीं है बेटा?'

'नहीं मां! मुझे कुछ भी नहीं है, आप सो जाओ; जेम्ज ने कहा।' मां सो गई लेकिन जेम्ज पानी से बाहर पड़ी हुई मच्छली की भाँति बेचैन रहा। प्रातः काल जेम्ज के अन्दर से आवाज आई। वह थी एक दैवी आवाज, जो उस व्यक्ति को सुनाई देती हैं जो किसी कार्य को करने के लिये

तड़प उठता है, मानों उस की रात भर की तपस्या ने उस के अन्तःकरण को जगमगा दिया था, जेम्ज ने अपनी दोनों मुट्ठियों को पहले तो बन्द किया फिर दोनों हथेलियों को रगड़ कर बड़े जोर से तीन बार कहा : 'James will no longer be a bought slave' सूर्य उदय होने पर बिना कुछ खाये-पिये, जेम्ज एक स्कूल में पहुंच गया और उस स्कूल के प्रिंसीपल से कहा 'मैं कोई नौकरी चाहता हूं।'

'तुम क्या क्या कर सकते हो? प्रिंसीपल ने पूछा।

'जो कुछ आप करवायेंगे, वही करूंगा' जेम्ज ने कहा।

प्रिंसिपल साहब ने कई कार्यों के बारे में पूछा, जेम्ज का एक ही उत्तर था। Yes 'I can do' प्रिंसिपल साहब ने सोचा बड़ा विचित्र लड़का है, जिस कार्य के लिये पूछता हूं उसी के लिये 'Yes' हां कर देता है। पास में पड़े हुए तीन मन के पत्थर पर प्रिंसिपल साहब की नजर गई, प्रिंसिपल साहब ने एक दम पूछा 'Can you carry

this stone ?' 'क्या तुम यह पत्थर उठा सकते हो' Yes I can, हां में उठा सकता हूं यह कह कर आदेश की प्रतीक्षा किये बिना जेम्ज उस पत्थर को उठाने लगा; जेम्ज को तो पसीने आये ही थे, लेकिन उस पत्थर को भी पसीने आ गये । प्रिंसिपल साहब ने उस ग्यारह वर्षीय बालक की हिम्मत को देखकर उसे आशीर्वाद दिया, और उसको स्कूल की घण्टी बजाने के लिये सर्विस दे दी ।

प्रिय पाठक गण ! आपको यह जान कर आश्चर्य होगा, कि जेम्ज जहां लिंकन की तरह अमेरिका का प्रेसिडेन्ट बना वहां वह पचास भाषाओं का विद्वान भी था । इन उदाहरणों को पढ़ने के पश्चात पाठकगण मेरी फिलासफी के साथ सहमत होंगे, कि जब Dreamer, Doer, बन जाता है, तब वह लिंकन बन जाता है । वह सरदार पटेल, सुभाष चन्द्र बोस और लाल बहादुर शास्त्री भी बन जाता है । परन्तु जब 'Dreamer' सपने लेने वाला 'Doer' नहीं बनता और सपनों के संसार

में ही भ्रमण करता रहता हैं, तब वह शेख़-चिल्लो का अवतार बन जाता है ।

आप सभी शेख चिल्ली के नाम से तो भली भांति परिचित है । भारत में उस की कहानियां प्रसिद्ध है । वह एक बहुत बड़ा 'Dreamer' सपने लेने वाला था एक बार किसो सेठ ने शेख चिल्लो को कहा; 'क्यों भाई शेख चिल्लो यह घी का घड़ा अमूक स्थान पर ले जाना है, क्या दोगे इसको मजदूरी ? शेख चिल्ली ने पूछा ।' 'चार पैंसे' सेठ ने उत्तर दिया । 'बहुत अच्छा स्वीकार हें' यह कहकर शेख चिल्ली ने उस घड़े को अपने सिर पर रख लिया. चलने से पहले ही स्वप्न संसार में विचरण करने लगा 'चार पैसे की मुर्गी लुंगा, मुर्गी के बच्चे खच्चे बेचकर एक बकरी लूंगा, बकरी के बच्चे खच्चे बेच कर गाय और गाय बेच कर घोड़े और घोड़े बेचकर एक हाथी लूंगा, हाथी बेचकर जो रुपया आयेगा उससे दो शादियां करवाऊंगा । माता पिता ने उन लड़कियों का नाम कुछ भो रखा हो मैं

उनका नाम बदल दूंगा, एक का नाम रखूगा प्यारी और दूसरी का नाम रखूगा बेप्यारी। फिर मेरे आशीर्वाद से उनके भी बच्चे खच्चे होंगे। जब प्यारी के बच्चे मेरे पास आया करेंगे, तो बड़े प्यार से उनको गोद में उठाकर चूमा करूंगा, लेकिन जब बेप्यारी के बच्चे मेरे पास आयेंगे, तो उनको ठोकर मार कर कहूंगा 'हटो परे' यह कह कर शेख-चिल्ली ने ठोकर मारने का अभिनय किया। घी का घड़ा धड़ाम से जमीन पर गिर कर टूट गया। सारा घी मिट्टी में मिल गया। सेठ ने कहा, 'बेवकूफ कहीं का, तूने मेरा सारा घी मिट्टी में मिला दिया! शेख चिल्ली ने सेठ के मुंह पर थपप्ड़ मारते हुए कहा, अगर मैं तेरा घी मिट्टी में मिलाने से ही बेवकूफ हूं, तो मुझ से डबल बेवकूफ तू है, जिसने मेरा बना बनाया घर ही मिट्टी में मिला दिया है। अब आपकी समझ में आ गया होगा, कि केवल स्वप्न लेने वाला शेख चिल्ली का चचेरा भाई बन जाता है।

परन्तु मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि कुछ न करने से सपने लेते रहना कई दर्जे अच्छा है। वजाये इसके कि हम राष्ट्र का माल ठोस ठोस कर खाये। माता पिता की गाढे पसीने की कमाई से पेट का लैटर बक्स ठोस ठोस कर भरें और दिन रात चद्दर तान कर खुर्राण्टे भरते रहें या फिर टाईम को वेरहमी से काटने के लिये ताश खेलते रहें या फिर सिग्रेट के कस लगाते हुए प्राकृतिक शुद्ध वायु को दूषित करते हुए, सिनेमा हाल में बैठे हुए जम्भाईया लेते रहें, यह अच्छा है, कि यदि हम (Doer) कर्ता नहीं बन कते, तो कम से कम शेख चिल्ली की तरह (Dreamer) सपने लेवता बने रहें। ऐसा करने से और कुछ नहीं तो शेख चिल्ली की तरह बेवकूफों की हिस्ट्री में नाम अवश्य अंकित हो जायेगा इस लिये तो किसी महान विचारक ने कहा था, Dreaming is better than to remain in the limbo of indolence. आलस्य एंव तन्द्रा में पड़ा रहने को बजाये सपनों के परों

पर उड़ते रहना अधिक अच्छा है ।

सफलता के शिखर पर चढ़ने के लिये (labour) परिश्रम बहुत ही आवश्यक है, मेरे देश के नवयुवक, नवयुवतियां प्राय: परिश्रम से जी चुराते है । Modern youngman) आधुनिक युवक को तो पहचान ही यही है कि वह स्वयं भो एक तिनके के दो न करे और जो भाई करते हैं उनको (खोता) गधा कहे । भारतीय युवक चाहता है, कि उसको कोई ऐसी पोस्ट मिले जहां उसे पैसे भी खूब मिलें, लेकिन दिन भर कार्य कुछ भी न करना पडे । बस टांग पर टांग रख कर किसो आफिस में बैठकर सिग्रटों की धज्जियां उड़ाता रहे । या फिर गप्पों के गोल गप्पे और गलों बातों के गुलछर्रे उड़ाता रहे । कई बार कई भाईयों को कहते हुए सुनता हूं आप भी सुनत होंगे । 'अरे भाई नौंकरी बहुत बढ़िया मिल गई है । काम काज कुछ भो नहीं करना पड़ता । 'अच्छा यदि ऐसा ही है, तब तो भाई तुम बहुत ही खुश किसम्त हो, लेकिन जनाब आय के आफिस में कार्य तो काफी होता।

है। उसे कौन करता है? दूसरे मित्र के पूछने पर पहला मित्र मूच्छों पर ताब देते हुए मुस्करा कर बड़ी शान के साथ कहता है। "हैं कुछ (खोते) गधे जा दिन भर लगे रहते हैं। काम करने वाले भारत में गधे माने जाते हैं, और निठुले खुशकिस्मत, भाग्यशाली एंव Worldywise वरडली वाईज समझे जाते है।

ओ मेरे नौजवान दोस्तो! यदि अपना निर्माण करना है और करना है नवभारत का निर्माण तो छोड़ो इस मनोवृत्ति को, और अपने हृदय की डायरी पर लिख लो जर्मन फिलास्फर गेटे (Goethe) के अमर शब्द:—

'Labour is life. Labour is golry. अर्थात- परिश्रम जान है, और परिश्रम ही शान है।

आज जमन और जापान क्यों उन्नति के शिखर पर हैं? केवल इस लिए कि वहाँ के विद्यार्थी वहां का युवा वर्ग परिश्रम के जोवन से प्यार करता है। कहते हैं कि एक बार इंगलैंड के किसी विचारक के मन में यह विचार आया कि देखना चहिए कि

जापान इतनी शीघ्र उन्नति क्यों कर गया? वह यह विचार लेकर जापान पहुंचा। एक दिन वह किसी लोकल बस में यात्रा कर रहा था। प्रातःकाल का समय था। उसी लोकल बस में एक जापानी विद्यार्थी भी बैठा हुआ था, जिसके हाथ में एक खुली हुई पुस्तक थी। उस अंग्रेज विचारक ने उस जापानी बिद्यार्थी से पूछा, तुम क्या याद कर रहे हो? What are you memorising? उस जापानी विद्यार्थी ने पहले तो उस अंग्रेज की आवाज ही नहीं सुनी, तब उस अंग्रेज ने उस बालक को कन्धे से पकड़ कर हिलाया और उसका ध्यान पुस्तक से हटाकर अपनी ओर लगाया तब फिर प्रश्न पूछा। उस विद्यार्थी ने उत्तर देने की बजाये उल्टा उस अंग्रेज से ही प्रश्न कर दिया 'Where do you belong from?' आप कहां के रहने वाले हैं? 'I am an Englander' मैं इंगलैंड का रहने वाला हूं। क्या आप अंग्रेजी भाषा का सब से बड़ा शब्द जानते हो? उस अंग्रेज ने नकारात्मक उत्तर दिया, तब छात्र ने कहा

कि मैं अंग्रेजी भाषा का सब से बड़ा शब्द याद कर रहा हूं।

बहुत से पाठक गण पूछेंगें कि वह कौनसा शब्द है जिन पाठकों के पास (Consise Oxford Dictionery) है, वे उसके 456 पृष्ट पर देखें, 'वहां एक शब्द है' Flaucci........जिस में 29 अक्षर हैं।

'जैसे चावलों का एक दाना देखकर सब चावलों का पता चलता जाता है ऐसे ही उस अंग्रेज ने एक छात्र को देखकर अन्दाजा लगाया, कि जापान के उत्थान का कारण यहां के परिश्रमी लोग हैं। किसी जाति, एंव राष्ट्र, व्याक्ति एंव समाज की सफलता परिश्रम पर आधारित है। परिश्रम दृढ़ संकल्प Firm determination) रखने वाले व्यक्ति के सामने सफलता झुक जाती हैं, सफलता उसके चरण चूम लेती है। और सफलता की देवी आगे बढ़कर उस व्यक्ति के गले में जयमाला डाल कर सदा के लिये उसकी चेरी बन जाती है।

एक बार मैं ग्रीष्म अवकाश के दिनों में पर्वत यात्रा के लिये निकल पड़ा। शिमला से ऊपर पहाड़ों पर घूम रहा था। घूमते घूमते थक कर एक चट्टान पर बैठ गया। सामने देखा तो एक चट्टान की छाती पर एक विशाल वृक्ष लहलहा रहा था। मन में एक विचार आया कि इस पर्वत की 'Roeky chest' छाती पर यह वृक्ष कैसे उग गया? विचारते विचारते कल्पना के पंखों पर उड़ने लगा। मैंने कल्पना की कि जब यह वृक्ष यहां नहीं था, कोई पक्षी यहां इस चट्टान पर बैठा होगा उस ने बिष्ठा की, उस की बिष्ठा में इस बृक्ष का बीज था। बीज जब पक्षी के पेट की अंधेरी कोठरी से बाहर आया, अपने आप को मुक्त वातावरण में पाकर वह बीज खिल खिलाकर हंसनें लगा। चट्टा।न ने बीज से हंसने का का कारण पुछा। वीज नें अपनी मूछों पर ताव देते हुए कहा, कि मैं कई दिनों से पक्षी के पेट में कैद था। और आज मैं अपने आपको मुक्त एंव स्वच्छन्द देखकर प्रसन्न हूं। इस स्वच्छन्द

बातावरण में मैं अपनी इच्छा के अनुसार बढ़ूंगा फूलूंगा, बीज की यह बात सुनकर पर्वत खिल खिला कर हंसने लगा। बीज ने पूछा, 'ओ! पर्वत तुम क्यों हंसते हो ?' पर्वत ने उत्तर दिया 'मैं तुम्हारी भोली भाली एवं मूर्खता पूर्ण बातों को सुनकर हंसता हूं।' 'वह क्यों'? बीज ने पूछा। पर्वत ने कहा कि 'क्या तुम नहीं देखते, कि तुम मेरी अस्पात जैसी छाती पर कैसे उग सकते हो ? बीज ने अपनी कोमल छाती पर हाथ मारते हुए कहा, 'मैं उगूंगा, उग कर रहूंगा, फलूंगा, फूलूंगा'। पर्वत फिर कहका मार कर हंसने लगा। इतने में मन्द मन्द वायु चलने लगी और देखते ही देखते तूफान का रूप धारण कर गई। तूफान मिट्टी उड़ाकर लाया। जिससे वह बीज मिट्टी से ढक गया। तूफान बन्द हो गया। उसके पश्चात धीमी धीमी बूंदे पड़ने लगी बीज के चारों ओर मिट्टी पहले ही जमा हो चुकी थी। अब पानी भी मिल गया वर्षा समाप्त हो गई। सूर्य की प्रखर किरणों ने बीज में ऊषनता

पैदा की जिससे बीजने अंकुर बनकर अपना सिर धीरे धीरे मिट्टी से बाहर निकाला। अंकुर दिन प्रतिदिन प्रगति की ओर बढ़ने लगा। कुछ ही दिनों में एक छोटा सा पौधा बनकर लहलहाने लगा पर्वत ने बीज के दृढ संकल्प को देख कर अपना मस्तक झुका दिया। एक भूचाल आया उस भूचाल ने सारे पर्वत को हिला दिया, जिससे पर्वत की छाती में एक दराड़ पड़ गई। जिससे पौधे की जड़ों को अवकाश मिल गया और कुछ ही वर्षों में दृढ़ संकल्पी बीज एक विशाल पेड़ बन कर लहलहाने लगा। सच है दृढ़ संकल्प के सामने चट्टानें भी मोम हो जाती है।

हिन्दी के किसी कवि ने ठीक कहा है:-

यह दुराशा है, कि कोई साथ देगा।
पांव फिसला तो कोई हाथ देगा॥
विश्व विघ्नों में चरण आगे बढ़ा।
तो सृष्टी का कणकण झुका निज माथ देगा॥

दृढ़ संकल्प के सामने संसार झुकता है। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु सहायक बन

जाती है। अब बाधाएं दूर होती हैं। एक नव शक्ति का संचार होता है।

संकल्प रहित मानव का जीवन भाप रहित इन्जन के समान है। जैसे वह इन्जन युगों के बीतने पर भी टस से मस नहीं हो सकता। जहाँ खड़ा होता है सारी आयु वहीं खड़ा रहता है। ऐसे ही संकल्प रहित मनुष्य कभी भी अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकता। सफलता उससे कोसों दूर रहती है। सफलता के अभिलाषी जनों को दृढ़ संकल्प संजों कर अपने दिल में अरमानो की दुनियाँ बसा कर संकल्प की स्टीम भर कर आगे बढना चाहिए। जब कोई व्यक्ति, चाहे वह विद्यार्थी हो या कोई अन्य व्यवसाय में लगा हुआ हो, संकल्प कर लेता है तो नदी, नाले, पहाड़ एव समुद्र उस के लिए स्वयं मार्ग दे देते है। दृढ़ संकल्पी मुसीबतों के मुस्टण्डों, बाधाओं के भूतों की छाती को रौंदता हुआ अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाता है।

जीवन में सफलता के दर्शन करने के लिए परिश्रम (Hard work)भी बहुत ही आवश्यक है। अपने ध्येय की पूर्ति के लिये अनथक परिश्रम की अवश्यकता है। वेदों में कहा हैं-

'न ऋते श्रान्तस्य सखाय देवा।' देवता भी तब तक सहायता नहीं करते जब तक मनुष्य थक कर चूर न हो जाये। जो लोग केवल भगवान से अपनी सफलता के लिये प्रार्थना करना जानते है, परन्तु परिश्रम नही करते, ऐसे लोग सात जन्म में भी सफलता के भागी नहीं बन सकते। जब हम अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिये अपनी पूर्ण शक्तियों को दाव पर लगा देते हैं और फिर भगवान से प्रार्थना करते हैं तब भगवान हमारी प्रार्थना को स्वीकार करता है अंग्रेजी वालों ने सच ही तो कहा है.-

God helps those, who help their themselves. परमात्मा भी उन्हीं को सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं। वेदों में कहा है कि; काम में (Interest) रुची रखने वाला व्यक्ति जो निरन्तर

काम में लगा रहता है। वहीं सम्पूर्ण और सुखी जीवन का उपभोग करता है, तुलसी दास ने लिखा है-

'सकल पदार्थ है जग माहीं,
कर्म हीन नर पावत नाहीं।'

इस विश्व में सभी प्रकार के पदार्थ हैं, जो प्यारे माता-पिता परमात्मा ने अपने पुत्र मानव के लिये बनाये हैं, परन्तु इन पदार्थों का उपभोग कर्मयोगी ही कर सकता है। An idle man cannot taste the sweet fruits of the world. अर्थात आलसी व्यक्ति अपने जीवन में संसार के स्वादिष्ट फलों का उपभोग नहीं कर सकता। मानव के लिए सबसे बड़ी पूजा का काम है कहा भी है- Work is the real worship काम ही वास्तविक पूजा है। Samuel Smiles ने लिखा है It is idleness that is the curse of man not labour. अर्थात निठल्लापन मनुष्य के लिए अभिशाप हैं-परिश्रम नहीं! आगे चल कर Samuel Simles फिर लिखता है, 'Idleness eats the heart of man as of nation and consumes them as rust does iron.

अर्थात निठ्ठलापन राष्ट्रों तथा मनुष्यों के हृदय को ऐसे खा जाता है, जैसे जंक लोहे को समाप्त कर देता है। सिकन्दर ने पेरिस को जीतने के पश्चात वहां के लोगों के जीवन का अध्यन करते हुए कहा था कि परसियन की विलासता की दासता ही इन की हार का कारण हैं। Hard work is the key to success. परिश्रम ही सफलता की कुन्जा है। निठ्ठलापन, मानसिक और शारिरिक आलस्य मनुष्य को अवनति के गर्त में डाल देता है। कहा भी तो है, 'Empty mind is a devil's workshop' खाली मन शैतान का घर। Blessed are those who put themsleves into hard-work, who learn to labour. धन्य वे लोग हैं, जो काम से जी नही चुराते, जो काम करने में रुचि लेते हैं। Labour may be a burden and a chastisement, but it is also an honour and a glory, without it nothing can be accomplished. All that is great in man comes through work, and civilizalion is its

product." अर्थात परिश्रम एक बोझ कहा जा सकता है परन्तु यह आन और शान है। इसके बिना कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। मानव की महानता और सभ्यता का विकास परिश्रम पर आधारित है।

प्रिय पाठको यदि आप अपना उत्थान चाहते हो, और चाहते हो उत्थान अपने देश का तो 'परिश्रम' को अपने जीवन का (Motto)माटो बना लो। अपना प्रत्येक क्षण किसी न किसी निर्माणात्मक कार्य में व्यतीत करो, Sydney Smith सिडनी स्मिथ ने लिखा है–

"Let every man be occupied in the highest employment of which his nature is capable and die with the consciousness that he has done his best." अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वभाव के अनुसार किसी न किसी महान कार्य में रत रहना चाहिए। जब वह मरे तो एक विचार उसके दिल में हो कि उसने जीवन का पूर्ण उपयोग किया है।

उपनिषदों में लिखा है कि हमें अपने (aim) ध्यये की पूर्ति के लिये तब तक लगा रहना चाहिए, जब तक उसमें सफलता प्राप्त नही हो जाती, "उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत्" Arise! Awake !! and stop not till the goal is not accomplished" निठ्ठले, कर्महीन व्यक्ति से Mental peace' मानसिक शान्ति कोसों दूर रहती है। परन्तु इसके विपरीत एक कर्म-योगी परिश्रमी व्यक्ति सच्ची शान्ति का आनन्द लेता है। (Dr. Marshall Hall) डाक्टर मार्शल हाल ने लिखा है:-

True happiness is never in found torpor of faculties, but in their action and useful employment. It is idlenes that exhausts not action, in which there is life, health and pleasure. Nothing is so injurious as unoccupied mind. सच्ची प्रसन्नता शक्तियों का निकम्मा पड़ा रहने से नही, अपितु उनका उचित प्रयोग करने से मिलती है। निकम्मा पड़ा रहने से मानव की शक्तियों का

अपव्यय होता है, परन्तु कार्य में लगा रहने से जीवन, स्वास्थय और प्रसन्नता मिलती है। भारत के नवयुवक एव युवातियों को, जो निकम्मा पड़ा रहने में ही अपना गौरव समझते है। जो काम को एक अभिशाप समझते हैं, विशेष कर भारतीय युवतियां तो निकम्मा पड़ा रहने, काम से जी चुराने में ही आधुनिकता समझती हैं। उनको (Mrs. Caroline Parthes) मिसेज कारोलाइन पार्थीज की शिक्षा, जो उसनें अपनी नव विवाहित पुत्री (Louisa) लुईसा को विवाह के समय दी, हर समय ध्यान में रखनी चाहिए। उसने अपनी बेटी को बहुत लम्बी चौड़ी शिक्षा दी थी। जिसका यहां वर्णन नहीं किया जा सकता। उस शिक्षाके जो महत्वपूर्ण शब्द हैं, वे ये हैं, The best relief is work, engaged in with interst and dilligence. अर्थात काम में ही विश्राम छुपा हुआ हैं। यदि उसको पूर्ण रुचि एवं परिश्रम से किया जाये।

सफलता के अभिलाषी परिश्रम करना अपने जीवन की एक (Hobby) हाबी बना

लें। विश्व के महापुरुषों की भांति अपने जीवन के लिये कोई प्रिय माटो (Motto) बना लें। फिर प्रातः और सांय उसे अपने जीवन का प्रेरणादायक मन्त्र समझ कर उसका जाप करें और उसके अनुसार अपने जीवन को ढालने एवं आचारण करने का भरसक यत्न किया करें। जैसा कि जगत विख्यात एक इतिहासकार राबर्टसन (Robortson) के जीवन का एक माटो (Motto था, (Vita Sine literis mors est) 'Life without learning is death.' अर्थात जीवन बिना ज्ञान के मृत्यु है। वालेयर का माटो Motto था, 'Toujours all travail' (Always at work) अर्थात सदा कार्य में जुटे रहो। लासपेडे (Lacepede) के जीवन का सिद्धान्त था, 'Vivre c'est Veiller' (To live is to work) जीवन कार्य के लिये है, महात्मा गांधी के जीवन का नारा था, 'Work is worship' काम ही पूजा है, पं॰ जवाहर लाल नेहरु कहा करते थे, आराम हराम है। ऐसे ही सफलता के ईच्छुक छात्र और छात्रायें, अन्य सभी व्यक्ति यह लिख लें:

'All hopeful work is the secret of happiness and success.' जीवन की सफलता और प्रसन्नता का रहस्य आशावादी होकर कार्य करने मैं निहोत है।

सफल जीवन व्यतीत करने के लिये उत्साह भी एक महत्वपूर्ण गुण है। उत्साह दो प्रकार का होता है। एक तो Moral courage') नैतिक उत्साह; दूसरा शारिरिक उत्साह (Physical courage) सफलता के इच्छुक व्यक्ति में, छात्र अथा छात्राओं में, दोनों प्रकार का उत्साह अनिवार्य है। नैतिक उत्साह (Morral courage) का स्थान बहुत ऊंचा स्थान है । Samuel Smiles ने लिखा है– "It is moral courage that characterizes the highest order of man-hood and woman-hood-the courage to seek and to speak the truth, the courage to be just, the courage to be honest, the courage to resist temptation, the courage to do one's duty." अर्थात यह नैतिक उतसाह ही है जा उच्च कोटी के स्त्री पुरुषों का निर्माण

करता है । सत्य की खोज और सत्य बोलने का साहस, न्याय का पक्ष लेना, ईमानदारी, और लोभ लालचों में न फसना आदि गुण नैतिक साहस के अन्तर्गत आ जाते हैं ।

साहस के बिना मनुष्य एक मृतक के समान हैं । साहस अनन्य शक्तियों का श्रोत है । साहसी मनुष्य के लिए इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं । आज हमारी आँखों के सामने जो विकास नजर आता है, यह सब साहस का ही परिणाम है । साहसी व्यक्ति बाधाओं के पुनः पुनः आने पर भी साहस को नहीं छोड़ते । इसके विपरीत जो साहस छोड़ देते हैं वे कायर कहलाते हैं, और ऐसे निरुत्साही कायर पुरुष वास्तविक मौत मरने से पहले कई बार मर चुके होंते हैं । उनका जीवन पुष्प आंशका और भय की ज्वालाओं से झुलस जाता है । ऐसा मनुष्य सफलता तो अलग रही, सफलता का स्वप्न भी नहीं ले सकता । किसी कार्य में असफल हो जाना कोई पाप नहीं है ।

महापुरुषों के जीवन अनेक प्रकार की असफलताओं से भरपूर हैं, परन्तु असफता का थप्पेड़ा खाकर साहस खो बैठन महान पाप है, मृत्यु है।

गिरते हैं शहस्वार ही मैदान जंग में, जो कभी चढे ही नहीं वे क्या खाक गिरेंगे। साहसी व्यक्ति के लिये प्रत्येक असफलता सफलता की और एक नया पग होती है। वे असफलता में हो सफलता के दर्शन करते है। असफलता उनके हृदयों में फिर से उठने का एक अ म्य साहप भर देती है। साहसी पुरुषों के होंठों पर एक मुस्कान होती है। दिल मे एक अमिट एवं गहरी भावना होती है, उसके जीवन का सिद्धान्त होता है (Life is struggle) जीवन सघंर्ष है। जीवन साहसो व्यक्नियों के लिये सघंर्ष न रहकर एक खेल वन जाता है। वे तो जीवन सघंर्षों कोजावन राग समझने लग जाते है। वे कहते हैं–

'I am not fighting my fight, but I am singing my song.' मैं लड़ाई नहीं लड़ रहा हूं, अपितु मैं अपना गाना गा रहा हूं।

जो जीवन में आने वाली बाधाओं, आपित्तायों संघर्षों में भी हंसकर जीना जानते हैं। विजय उन्हीं लोगों के पांव चूमती है। सफलता का ताज (Crown of success) उन्हो के सिर पर शोभायमान होता है। विशेष कर युवा अवस्था तो बनी ही संघर्ष के लिए है। इंगलिश के एक महान आशावादी कवि Brwning ब्राऊनिंग ने कहा है- (Youth should welcome each rebuff, that turns the earth's smoothness rough) युवक को धरती की दिशा बदल देने वाले तूफानों का स्वागत करना चाहिए। जहाजों से जो टकराये उसे तूफान कहते हैं, तूफानों से जो टक्कराये उसे इनसान कहते हैं।

जो व्यक्ति संघर्षों में से गुजरता है वही जीवन के मूल्य को जान सकता है, जीने की कला को वहीं सीख सकता है, जो सघंर्षो के प्रहार सहने के पश्चात भी हतोत्साह नहीं होता। सघंर्षो में जीवन निखरता है। आपत्तियों की अग्नि में जीवन चमक उठता है, सघंर्षो से जूझने से जातियों में राष्ट्रों में एक नव जीवन का

संचार होता है। सच है जीवन पुष्प कांटों में खिलता है, परन्तु नरम शैय्या पर पड़ते ही मुर्झा जाता है। सफलता के अभिलाषी को अपने सीने में अदम्नीय साहस को सजोना पड़ता है। साहसी व्यक्ति के प्रखर तेज के सामने, प्रथम तो निराशा की घटायें आती ही नहीं, यदि आती भी हैं तो नष्ट भ्रष्ट हो जाती हैं। प्रसन्नता के अवसर पर सभी व्यक्ति प्रसन्न होते हैं। परन्तु साहसी व्यक्ति वह होते हैं, जो आपत्तियों और सकंटो की घड़ियों में भी प्रसन्नता के राग आलापते हैं। आजादी शमाँ के परवाने राम प्रसाद बिस्मल का नाम आपने सुना होगा। वह वीर साहस का अवतार था। जब उस शहीद को ग्रिफतार कर लिया गया। भारत माता का मायानाज सपूत पुलिस के गिरोह से घिरा हुआ बाजारों में से गुजर रहा था, हाथों में हथकड़ियां और पांव में बेड़ियां पड़ी हुई थीं। जहां उस वीर की ग्रिफतारी पर भारतीय लोग आंसु बहा रहे थे। वहां यह साहसी वीर गाता हुआ जा रहा था)

"सर फिरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है ॥"

स्वतन्त्रता संग्राम के एक और महान सैनानी खुदी राम बोस को फांसी का आदेश सुनाया जा चुका था. जेलर ने खुदी राम बोस से अन्तिम इच्छा के लिए पूछा, खुदी राम बोस ने क । कि मेरे लिए एक पक्का हुआ 'आम' लादो । जेलर ने एक आम लाकर खुदी राम बोस का जेल कोठरी में सो न्चो पर रख दिया और चला गया । खुदी राम बोस ने आम को खाया और छिलके में फुट बाल की तरह हवा भर कर उसी स्थान पर रख दिया। जहां जेलर ने रखा था । थोड़ी देर बाद जेलर आया उस ने देखा कि आम वैसा का वैसा ही रखा हुआ है। सोचने लगा 'विचारा खा भी कैसे सकता है जिस के सामने मौत साक्षात रूप धारण कर के खड़ी हो। वह कैसे कोई चीज खा सकता है ? निरसन्देह मौत के भय के सामने भूख-प्यास खत्म हो जाती है । अच्छी बात यदि आप नहीं खा सकतो

तो किसी और को दे देता हूं । यह सोच कर आगे बढ़ कर वायु से पूर्ण आम के छिलके को हाथ में उठाया तो वह पिचक गया, खुदी राम बोस । हां, सीकंचों के पीछे खड़ा हुआ बोस—जिसे अभी कुछ घण्टे के पश्चात् फांसी लगने वाली थी, खिलखला कर हंस पड़ा । जेलर देख कर चकित हो गया कि जिस व्यक्ति के सामने मौत मुंह खोले खड़ी हो, वह फिर भी हंस रहा हो । यह है (Moral courage) नैतिक साहस का बेजोड़ उदाहरण, जो विश्व के किसी भी शहीदी इतिहास में नहीं मिल सकता ।

कहते हैं कि जब नेपोलियन की सेना विजय के बाद विजय प्राप्त करती हुई आगे बढ़ रही थी तो बढ़ती हुई सेना सहसा रुक गई । नैपोलियन के कारण पूछने पर उस के जरनैलज ने बताया कि वे आगे नहीं बढ़ सकते क्योंकि आगे एलप्स जैसा ऊंचा पर्वत खड़ा हुआ है । नेपोलियन ने जो साहस एवं वीरता का पुतला था, सिंह गर्जना करते हुए कहा 'एलप्स ! मेरे सामने बाधा बन कर खड़ा नहीं हो सकता ।' यह कहते ही अपने

घोड़े को ऐड़ लगाई, घोड़ा अपनी टापों से अलप्स की छाती को रौंदता हुआ आगे बढ़ा अलप्स की गगन चुम्बी चोटी मानों साहसी वीर नैपोलियन को झुक कर सलाम करने लगी और देखते ही देखते वीर नेपोलियन अपनी समस्त सेना सहित अलप्स को रौंदता हुआ दूसरी ओंर चला गया।

राजा ब्रूस (Bruce) की जीवन गाथा, ब्रुस के जीवन की दो पहलुओं पर प्रकाश डालती है। एक है हतोत्साही ब्रुस, जो विजय प्राप्ती की सभी आशाओं को खो कर अपने शत्रुओं से बचने के लिये जंगल में मारा मारा घूम रहा था। झाड़ी की आड़ में लेटा हुआ अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उस ने एक मकड़ी को देखा जो अपने तार के सहारे अपने गन्तव्य स्थान तक पहुंचने से पूर्व गिर जाती थी। परन्तु मकड़ी ने साहस नहीं छोड़ा। एक क्षण आया कि मकडी अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचने में सफल हुई। इस दृश्य ने ब्रूस को दूसरा रूप दिया। कायर हतोत्साही ब्रूस के हृदय में साहस की चिंगारी भड़क

उठी । ब्रूस ने अपने साहस को दोनों हाथों में बटोरा । अदम्नीय साहस सीनें में संजो कर वह शत्रु सैना के साथ भिड़ गया परिणाम स्वरूप उस को विजय हुई ।

कभी जमाना था कि भारताय अपनें साहस और बेजोड़ वीरता के लिये संसार में प्रसिद्ध थे । भारत साहसो वीरो की भूमि थी कंचन यहां बरसते थे ।

विदेशी लोग हर समय इस पुण्य भूमिके दर्शनों के लिये तरसते थे। जब भारत के युवक युवतियां वेद उपनिषद गीता के ज्ञान से अनुप्राणित होते थे, मृत्यु को भी [Open challange] खुली चुनौती देने वाले वीरों के सामने कोई नहीं टिक सकता था। यह भारतीय साहस ही तो था जिस के बल पर उन्हों ने सभ्यता के उच्चतम शिखरों के नापा था, ज्ञान की गहराईयों को जाना था । जिस मृत्यु से संसार कांप उठता है उस मृत्यु को भी भारतीय नर-नारी प्रसन्नता से आलिंगन करते थे । उस उत्साह; एवं वीरता का कारण क्या था ? और अब उत्साह, वीरता क्यों नहीं है ।

उत्तर स्पष्ट है कि साहस और वीरता के स्रोत वेद, उपनिषद गीता के ज्ञान को आज के भारतीय भूल गये हैं।

यही एक कारण है कि हमारे पूर्वज शेर थे, तो स्यार हैं हम, वे वीर थे तो कायर हैं हम। यदि भारतीय नर नारी विलासता में न फंस कर अमर साहस के अमर स्रोत वैदिक ज्ञान का, धार्मिक ग्रन्थों का पय पान करते रहते, तो क्या मजाल थी कि मुसलमान सात सौ वर्ष तक हम पर शासन करते और दो सौ वर्ष तक अंग्रेज हम भारतियों का रक्त चूसता रहता। क्या मजाल थी कि आज चीन और पाकिस्तान हमें आंखें दिखाते। आग का साहस उसकी जला देने वाली शक्ति का नाम है। जब आग उस साहस को खो बैठती है, तो एक छोटी सी चींटी भी उस आग के ढेर को रौंदती हुई आगे बढ़ती है, परन्तु जब तक उस में साहस (दाहकत्व) विद्यमान रहता है, चींटी की तो क्या मजाल हाथी और शेर भी बचकर निकलने का प्रयास करते हैं।

भारतीय युवक एवं युवतियो यदि आप वास्तविक सफलता चाहते हुए अपने

खोये हुए मान को पुनः प्राप्त करना चाहते हो तो अपने सीनों में अदम्य साहस को स्थान दो। साहस प्राप्त करने के लिये साहसा पूर्ण विचारों का अध्यन करो। वे विचार आपको (Detective Novels) जासूसी उपन्यासों अथवा सिनेमा हाल से नहीं मिलेगें। उनके लिये आपको वेद उपनिषद और गीता एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना होगा फिर आप देखेंगे कि सफलता आपके चरणों की चेरी बन जायेगी, जो कुछ आप चाहेंगें आपको वही मिलेगा।

मन चाहा फल उसको मिला जिसने साहस से काम लिया। साहस का सम्बल जो लेकर चला उसी का लोगों ने नाम लिया। साहस के बारे में लिखते हुए जर्मन फिलास्फर गेटे Goeth ने कहा है-

'Courage has genius, power and magic in it.' अर्थात साहस में अलौकिक बुद्धि, अलौकिक शक्ति एवं जादू भरा हुआ है

यदि आप साहस के स्थान पर भाग्य पर भरोसा रखेंगें जैसा कि भारतियों में देखने में आता है। तो आप उन्नति एवं सफलता की आशा सदा के लिये छोड़ दें, भाग्य के विषय में Joseph Johnson ने अपनी पुस्तकSelf Effort में लिखा है- 'Luck is an ignis fatuus, you may follow it to ruine but not success.' अर्थात भाग्य एक धोखा है, एक मृगतृष्णा है। अपने सर्वनाश के लिये तुम इस का अनुसरण कर सकते हो, परन्तु सफलता के लिये नहीं। विश्व के सफल व्यक्ति भाग्य के भूत को अपनी आईरनी होल(Ironv-heel) से रौंदते हुए आगे बढे हैं। शिवाजी के जीवन में एक घटना आती है।

एक बार शिवा की पूज्य माता जीजा बाई अपने किले की छत पर चढी, उसने दूर तक देखा, तो कुछ दूरी पर उसने मुगलों का झण्डा एक किले पर लहराते हुए देखा मां उदास होकर नीचे आ गई। मां की उदासीनता का कारण जब शिवा ने. पूछा

तो मां ने कहा 'बेटा शिवा ! मैं ने एक किले पर मुगलों का झण्डा देखा है। अब मैं जब दोबारा किले पर चढ़ूं तो मुझे वहां मुगलों के झण्डे की बजाये तुम्हारा झण्डा नजर आये। शिवा अपनी मां का बहुत भक्त था। शिवा ने अपना मां का मस्तक झुकाया, और सभी फौजों को कूच का आदेश दे कर पुनः मां के पास आशीर्वाद लेने के लिये आया। आशीर्वाद देते हुए मां ने कहा, 'जाओ बेटा शिवा! यदि तुम्हारी तकदीर में हुआ तो अवश्य विजय होगी'। तकदीर शब्द सुनकर शिवा की आंखों से आग बरसने लगी। शिवा ने अपनी शमशीर (तलवार) को निकाला और उस चम चमाती लपलपाती शमशीर को हवा में घुमाते हुए शिवा ने मुगलों की तलवार की ओर संकेत करते हुये यूं कहा—

वह तलवार क्या कर सकती है,
शिवा की शमशीर के आगे।

ओ मां यह तकदीर झुक जायेगी,
शिवा की तदबीर के आगे।

हिम्मत के सामने तकदीर कुछ नहीं कर सकती। किसी कवि ने कहा है:—

कदम चूम लेती है खुद आके मंजिल,
मुसाफिर अगर अपनी हिम्मत न हारे।

साहसी व्यक्ति ही सफलता का साक्षात करते हैं, जब कि भाग्य वादी बैठे हुए रोते ही रहते हैं। जैसा वि कहा भी है–

अहले हिम्मत मंजले मकसूद तक
पहुंच भी गये।
जबकि बन्दाए तकदीर किस्मत से
गिला करते रहे।

(Basil King) ने एक बार कहा था, Be bold, and mighty forces will come to your aid ' अर्थात एक बार साहसी बन जाईये, फिर विश्व की सभी महान शक्तीयां आपकी सहायता के लिए आपने आप ही आयेंगी। Joseph Johnson ने अपनी पुस्तक में एक अन्य स्थान पर लिखा है– 'A pound of pluck is worth a ton of luck.' अर्थात एक पौंड साहस एक टन भाग्य से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

सफलता का अलिंगन करने के लिये 'Faith' को बहुत बड़ी आवश्यकता है। किसी अपने से महान शक्ति में (जिसको लोगों ने भिन्न भिन्न नामों से पुकारा है) अटल, विश्वास महान शक्तीयों को जन्म देता है, किसी ने कहा भी तो है 'Faith is force' विश्वास अपने आप में एक शक्ति है, सफलता के इच्छुक जो किसी पुप्रीम पावर में विश्वास करते हैं, बाधाओं का भूत फिर उनके सामने नही ठहरता । प्रभु विश्वास के जागृत होते हो भय और शकांओं का लशकर मानव मन से जान बचा कर भाग निकलता हैं। जैसे सुर्य के उदय होने पर अन्धकार दुम दबा कर भागता है। वैसे ही विश्वाश के सूर्य के उदय होते ही मन मन्दिर में वास करने वालो सभा बुराईयां, भय, ईर्ष्या द्वेष आदि सदा के लिये नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि फिर वह व्यक्ति प्राणि मात्र में एकत्व को भावना का दर्शन करता है। तब वैर विरोध ईर्ष्या, द्वेष किस से करेगा सभो उसके अपने हो नजर आयेंगे। वह सव में अपने

स्वरूप के दर्शन करेगा । जब वह सबको प्यार करेगा तो तब उसको सब प्यार करेंगे । सभी उसके सहायक बन जायेंगे । सभी उसके शुभ चिन्तक बन जायेंगे । व्यक्ति उस महान (Great power house.) पावर हाऊस से कनक्शन जोड़ लेने के पश्चात ऐसे ही चमक उठेगा, जैसे बिजली घर से कनैक्शन होने पर बल्ब चमक उठता है, फिर उसको Light मिलेगी और Life मिलेगी ।

अपने मनोर्थों को सफल करने के लिये आत्म-विश्वास भी आपना एक महत्व-पूर्ण स्थान रखता है । परीश्रम आत्म विश्वास की जननी है और आत्म विश्वास सफलता का देवता है । आत्म विश्वास का तात्पर्य है, अपने ऊपर विश्वास । भगवान् ने मनुष्य को (Divine Powers) दंवी शक्तियां दी हैं । आत्म विश्वास के बिना वे दैवी शक्तियां खोई रहती हैं, उन का जागरण एवं प्रादुर्भाव नहीं हो सकता । Full faith in self is the secret of success अपने पर पूर्ण विश्वास ही सफलता का

रहस्य है। Trust always in your Divine Powers that will lead you to your goal. आप का दैवी शक्ति पर पूर्ण विश्वास ही आप को सफलता की ओर ले जायेगा। (Emerson) अमर्सन ने लिखा है Few men finds themselves before they die अपने मरने से पूर्व बहुत कम लोग अपने आप को जान पाते हैं। यदि हम आपना अध्यात्मिक एक्सरे (Spiritual X-ray) लें हम अपने भीतर अनन्त शक्तियों का भण्डार पायेंगे। इसी लिये तो मनुष्य के बारे में कहा है 'मनुश्य का दर्जा परमात्मा से दूसरे दर्जा है 'Man is second to God'। इस लिये मनुश्य को कभी भी अपने आप को हीन और नीच नहीं समझना चाहिये। अपने आप को नीच और हीन समझने वाला व्यक्ति आपने आप पर ही दोष नहीं लगाता अपितु वह अपने निर्माता भगवान् पर दोषारोपन करता है। प्रत्येक व्यक्ति का अपने आप को भगवान का अमर पुत्र समझना चाहिये। Swett Marden ने लिखा है :–

"Your institution, your instinct, your ambition tell you that there is much bigger man in you than you have ever found or used".

आप का अन्तर ज्ञान, आप की अन्तः प्रेरणा, आप की इच्छा इस बात का द्योतक हैं कि आप के अन्दर एक महान व्यक्तित्व छुपा हुआ है, जिस को आज तक न ही आप ने पाया है और न ही उस का प्रयोग किया है। मानव अपने स्वरूप को भूले हुये शेर की भांति भूला हुआ है।

कहते हैं कि एक बार एक शेरनी ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे को जन्म देते ही शेरनी की मृत्यु हो गई। बच्चे की आंखें बन्द थीं, भूख से व्याकुल इधर उधर लुड़क रहा था, इतने में भेड़ें चराता हुआ एक गडरिया वहाँ आ पहुंचा। गडरिये ने उस शेर के बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और अपने घर ले आया। कुछ दिनों के पश्चात जब शेर के बच्चे ने आंखें खोलीं तो वह अपने पास अनेक भेड़-बकरियां देख कर सोचने लगा यही मेरा परिवार है। जैसे

भेड़-बकरियाँ पानी पीती थीं, घास खाती थीं, वैसे ही उस ने भी पानी पीना और घास खाना आरम्भ कर दिया था। धीरे धीरे वह बच्चा युवा हो गया। एक दिन जब वह भेड बकरीयों के साथ जंगल में चर रहा था ऊंचे टीले पर खड़े हुए एक जागरुक शेर ने उस भूले हुए शेर को देखा। वह चकित हो गया कि यह शेर मेरे परिवार का सदस्य हो कर भेड़-बकरियों में विचर रहा है। उससे न रहा गया। जब उस ने देखा कि वह अकेला एक ओर चर रहा है। वह जागरुक शेर उस भूले हुये शेर के पास आ कर उसे समझाने लगा। परन्तु भूला हुआ शेर पहले तो सुनने को तैयार ही न हुआ। सुनने के पश्चात मानने से इनकार करने लगा, कहने लगा 'आप कौन होते हैं मुझे बरगलाने वाले? मैं ने तो जब से आंखें खोली हैं अपने चारों ओर इन्हीं भेड़ बकरियों को पाया है इस लिये यही मेरे सब कुछ हैं। तुम कौन होते हो मुझे उकसाने और भड़काने वाले? जब जागरुक शेर ने देखा कि वह ऐसे नहीं मानेगा तो उसे पासके साफ पानी के तालाब

पर ले गया और कहा 'भाई साहब ! इस पानी में अपनी परछाईं देखो। ध्यान पूर्वक मिलान करो, आप की शकल सूरत इन प्राणियों अर्थात् भेड़ बकरियों से मिलती है? या मुझ से मिलती है ?" भूले हुये शेर ने जब पानी के दर्पण में अपने आप को देखा तो वह यह देख कर आश्चर्य चकित हुआ कि उस की आकृति तो शेर से मिलती थी और उन भेड़ बकरियों से तो उस का दूर का भी वास्ता नहीं था। भूले हुए शेर ने अपने आप को पहचान लिया। उस के मन में, उस के समस्त शरीर में एक नई शक्ति बिजली की भांति दौड़ गई। अभी तक जो एक भीरु भेड़ बना हुआ था वास्तविक अर्थों में शेर बन गया। एक दहाड़ मारी जिसकी दहाड़ को सुन कर गडरिया बेहोश हो गया, सारी भेड़ बकरियां झाड़ियों में छिप कर बैठ गईं। जब तक शेर को अपसे ऊपर भरोसा नहीं था, वह गडरिये की लाठियों की मार अपनी पीठ पर वैसे ही सहता रहा जैसे दूसरी भेड़ बकरियां सहा करती थीं। परन्तु अपनी शक्तियों के पहचाने के पश्चात

वह सभी मुसीबतों, दुःखों से मुक्त हो गया। मुक्त ही नहीं हुआ, अपितु अब वह अपनी इच्छा के अनुसार अपनी मनो-कामना पूर्ण करने मे समर्थ हो गया था। यही अवस्था मनुश्य की है, जब तक मनुष्य को आपने आप पर विश्वास नहीं होना, जब तक वह आपने आप को नहीं जानता, वह अनेकों कष्ट उठाता है। सफलता उस से कोसों दूर भागती है। परन्तु जब उस को अपने ऊपर पूर्ण विश्वास हो जाता है तब वह उस शेर की भांति शक्तियों का पुंज बन जाता है, तब जो कुछ वह चाहता है उसे प्राप्त कर लेता है, जो कुछ वह बनना चाहता है, वही बन जाता है।

यह नितान्त सत्य है कि एक व्यक्ति जो कुछ बनना चाहे वह बन सकता है, जो कुछ पाना चाहे उसे पा सकता है। परन्तु इसके लिये उपरोत्क गुणों की बहुत अवश्यकता है। यदि आपको अपने जीवन से प्यार है, और आप अपने जीवन में कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखते हैं। यदि आप (Harmonious Development) अर्थात

शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास चाहते हैं, तो मेरे द्वारा लिखी हुई पुस्तक Wonders of Deep Breathing को मंगवा कर पढ़िये। इस पुस्तक का अध्ययन मनने तथा आचरण करने से आप अपने जीवन में एक महान् परिवर्तन के दर्शन करेंगे। आपके मित्र, सम्बन्धी, माता पिता, गुरुजन आप के चहूंमुखी विकास को देखकर दंग रह जावेंगे। आप अपने आप ही चिला उठेंगे मैं ने जान लिया है, जीवन का मार्ग, मैंने जान ली है जीवन की कला !

सफलता को अंग्रेजी भाषा में Success कहते हैं। यह सात अक्षरों से बना हुआ एक शब्द है, जिसके प्रत्येक अक्षर पर पृथक पृथक सगत पुस्तकें लिखी जा सकती हैं, और मैं लिखूंगा भी। यदि पाठ गण ने मेरी पुस्तकों का ऐसे ही स्वागत किया जैसे मेरे लैक्चरज का करते हैं। परन्तु यहां Success शब्द के तीन अंक्षरों पर थोड़ा सा प्रकाश डालता हूं (Success) सक्सेस शब्द में तीन (S) एस हैं। एक आरम्भ में और दो अन्त में।

जिस व्यक्ति के पास ये तीन (S) एस है वह अवश्य सफल होगा। वह जो चाहेगा उसको वही मन चाहा फल मिलेगा। Success सक्सैस शब्द इन तीन अक्षरों पर खड़ा हुआ है :
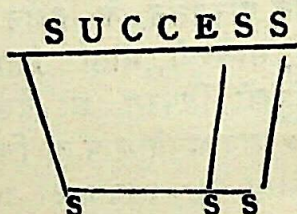
प्रथम 'S' एस, (Sound body) सुदृढ़ शरीर का प्रतीक है। दूसरा 'S' एस (Sound mind) सुदृढ़ मन का प्रतीक है और तीसरा 'S' एस (Sound Souls) सुदृढ़ आत्मा का प्रतीक है। जो व्यक्ति शरीर से स्वस्थ है मन, बुद्धि से स्वस्थ है और आत्मा से स्वस्थ है। सफलता उसकी है, विजय उसकी है, और वह विजय का है। सलफता के लिए सबसे आधार भूत वस्तु स्वास्थ्य है। बीमार और कमजोर व्यक्ति जीवन के मधुर फलों का आस्वादन नहीं कर

सकता, जिन्दगी का मजा नहीं ले सकता। स्वस्थ्य के बारे में जानने वाले पाठक मेरी अन्य दूसरी पुस्तकों की प्रतीक्षा करें। यूं स्वास्थ्य के बारे में बहुत व्यक्तियों ने पुस्तकें लिखी हैं, परन्तु उन में से अधिक तर लेखक निरोगी न होकर स्वयं रोगी होते है। परन्तु मैंने जिन स्वास्थ्य के नियमों का पालन किय है वह मेरे 15 वर्ष के अनुभव का निचोड़ हैं। यही एक कारण है कि डबल एम. एस होते हुए भी ईश्वर की कृपा और गुरू के आशोर्वाद से मैं किसी पहलवान से कम नहीं हूं। यह स्वास्थ्य कला आप को किसी डाक्टर से नहीं मिलेगी, क्योंकि शत प्रतिशत से अधिक डाक्टर आज अस्वस्थ हैं। न ही स्वास्थ्य टानिकस पर निर्भर है। मैंने बहुत से टानिक खाने वाले देखे हैं, चैम्पियन्स ओटस और बोरन विटा के कागजी पहलवान बहुत घूमते हैं, जो ऐसे टानिकस खाकर अपने आप ही टानिकस बन गये हैं। मुझे डाक्टर मिलते है जो बिमार एवं अस्वस्थ होते है। तब आप ही बताईये

कि स्वयं बिमार दूसरों को बिमारो का क्या खाक इलाज करेगा। स्वयं अस्वस्थ दूसरों को क्या खाक स्वस्थ्य देगा। यह एक प्रसिद्ध कहावत है, 'A kindled lamp can kindle the others.' जगता हुआ दीपक ही दूसरे बुझे हुए दीपकों को जला सकता है। इस सिद्धान्त के अनुसार हम सब स्वीकार करेंगे कि एक स्वस्थ मनुष्य ही दूसरों को स्वस्थ बना सकता है। स्वास्थ्य मार्कीट में लाखों रुपये खर्च करके भी आपको नही, मिलेगा। स्वस्थ्य कि कला सीखनी है, तो प्रो. 'देव' का द्वार खटखटाइये; वह खुलेगा और स्वास्थ्य के देवता के दर्शन होंगे। 'Ballanced body' बैलेंसड शरीर का नाम ही स्वास्थ्य शरीर है। आधुनिक मनुष्य के बारे में मैं कहा करता हूं Either hollow from inside or sekeleton from out side. या तो अधुनिक मनुष्य अन्दर से खोखला हो गया है या फिर बाहर से सूख कर हड्डियों का पिंजर हो गया है; जो संसार को तो नहीं अपितु किसी प्रयोग शाला की शोभा बढ़ा सकता

है । Sex—sucked+Sense—slaves. सैक्स से चूसे गये, इन्द्रियों के दास मनुष्य को 'देव' की फलास्फी और सिद्धान्त मानने पड़ेंगे, नहीं तो पड़ा रहेगा बिमारियों और दुःखों के नरक में; बिना अच्छे स्वास्थ्य के जीवन पुष्प नहीं खिल सकता, 'If there is no health, then there is no happiness, If there is no vigour then there is no victory' (Dev). यदि स्वास्थ्य नहीं तो प्रसन्नता भी नहीं यदि सामर्थ्य नहीं तो सफलता भी नहीं।'

दूसरा एस (S) (Sound Mind) स्वस्थ मन, (Sound will power) स्वस्थ मानसिक शक्ति का प्रतीक है । साईकालोजी का विद्यार्थी होने के नाते मेरा यह दावा है कि पहले मनुष्य के मन में कमजोरी आती और उसके पश्चात शरीर में, पहले मन अस्वस्थ होता है, और फिर शरीर। इसलिये (Sound will power) सुदृढ़ मानसिक शक्ति बहुत आवश्यक है । जिनकी (will power) कमजोर है वे जीवत होते हुए भी मरे हुए के समान है । आप पूछेंगे (will power) मानसिक

शक्ति को सशक्त एवं दृढ़ करने के लिये हम क्या खायें ? मुझे मुआफ करना दोस्तों मैं खाने पीने में बहुत कम विश्वास करता हूं, मेरा खोज तो यह कहतो है, कि शक्तियों का भण्डार बाहर नहीं है, वह अन्दर ही है। We eat to live, not live to eat. हम जीने के खाते हैं, खाने के लिये नहीं जाते। अण्डे, मीट में तो बिल्कुल भी शक्ति नही है। अंडे मीट उल्टा मनुष्य की शक्तियों का ह्रास करते हैं। होम्योपेथी एवं नेचरोंपेथी का विद्यार्थी होने के नाते भी मैं स्वस्थ्य के लिए अडे मीट, खाना हानीकारक समझता हूं। (Dr. Owen S. Parrett, M.D.) ने लिखा है, Aging and fatgue are hastened by flesh food. मीट खाने से सामर्थ्य शक्ति का ह्रास होता है, बुढ़ापा जल्दी आता है। मीट एवं अण्डों से हानियों के बारे में पाठक गण मेरी स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तक में पढेंगे। बहुत से लोगों का विचार है कि बिना मीट खाये कोई व्यक्ति अच्छा लडाकू सैनिक नहीं बन सकता। लेकिन ऐसा विचार रखने

वाले भाईयों को 'Open challenge' खुली चुनौती है। मैं यह सिद्ध कर सकता हूं, कि मीट खाने वाला राक्षस खूनखार भेड़िया तो बन सकता लेकिन बहादुर नही बन सकता। बहादुरी शरीर का विषय नही है, यह तो आत्मा और मन का विषय है। जैसे शक्ति का स्रोत कहीं बाहर न होकर मानव के अन्दर ही है। मैंरे प्रिय मित्र मुझे भली भांति जानते है, कि चण्डीगढ़ में रहते हुये मैंने मीट; अण्डे। मुर्गे हजम कर जाने वाले दर्जनों गुण्डों का मुकाबला किया है और उन राक्षसों के कब्जे से कई बहनों को बचाया है। मीट खाने वाले में मानसिक शक्ति का जागरण नही हो सकता, Strong will power. सृदढ़ मानसिक शक्ति सदृढ़ विचारों से बनती है। जो लोग अनेक प्रकार के (Phobea) भयोंका शिकार होते हैं वे केवल 'Will power' मानसिक शक्ति के कमजोर होने के कारण ही होते हैं। मानसिक शक्ति को सुदृढ़ बनाने का प्रेकिटकल नुसखा तो पाठगण मेरे पास रह कर ही सीख सकते हैं। जिसका आगे चलकर

थोड़ा theorahcal. वर्णन अवश्य करूंगा। परन्तु इस बात को तो आज ही अपने हृदय की डायरी पर अंकित कर लें कि Sound will power के बिना सफलता के दर्शन नहीं हो सकते। तीसरे नम्बर पर (Sound Soul) सुदृढ़ आत्मा है। जिस की आत्मिक शक्ति सुदृढ़ नहीं है, उस के लिये सफलता की आशा करना दुराशा मात्र है (Psychic Power) आत्मिक शक्ति तो एक एसी शक्ति है जिस का बाहर के भैतिक पदार्थों से कोई भी सम्बन्ध नहीं। न तो यह बादाम गिरियाँ खाने से प्राप्त की जा सकती है और न ही घी-दूध से इस को बलिष्ट बनाया जा सकता है। फिर मीट का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। आत्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिये तो मानव को उस के महान स्रोत (Supreme power house) परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है। आत्मा का परमात्मा के साथ सम्बन्य करना पड़ता है। इस [Connective Art] को सीखने के लिये। मानव को किसी महान गुरू के चरणों में बैठना पड़ता है। जो व्यक्ति Sound-body, Sound-mind,

Sound-Soul चाहते हैं वे प्रति दिन [Deep breathing] प्राणायाम और यौगिक आसनों का अभ्यास नित प्रति करें। तीन मास की निरन्तर प्रैक्टिस के पश्चात् अभ्यासी स्वयं अनुभव करने लग जायेंगे कि लेखक ने जो नुसखा लिखा है वह शत प्रतिशत से भी अधिक सत्य है।

Deep breathing is a science in itself प्राणायाम एक महान विज्ञान है जो इस विज्ञान को समझ कर इस पर आचरण करता है वह मन चाहा सुख पाता है। जो पाठक गण Deep breathing के चमत्कारी प्रभाव से जानकारी करना चाहते हैं वह मेरी ऊपर लिखित पुस्तक Wonders of Deep Breathing पढ़ें, उस के पढ़ने के पश्चात् मेरा यह दावा है कि इस साईंस का उपहास करने वाले इस साईंस के अनुयायी बने बिना नहीं रह सकते और जो भाई बहिन इस प्रयोगात्मक साईंस को सीखना चाहते हैं वे मेरी Training Classes को attend करने का प्रयत्न करें मेरी इस पुस्तक का अध्यन करने के पश्चात

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण मेरे साथ सहमत होंगे। यूं तो Exercise की सभी महापुरुषों ने प्रशंसा की है। स्वास्थ्य के लिये Exercise व्यायाम बहुत ही अनिवार्य है। उर्दू के किसी कवि ने लिखा भी हैं कि:

"दवा कोई वरजिश से बेहतर नहीं।
यह नुसखा है कम-खर्च बाला-नशीं।"

प्रिय पाठक गण ! यदि सफलता चाहते हो, विकास एवं उन्नति चाहते हो, दुनियां के मजे लेना चाहते हो तो इस पुस्तक को वार बार पढ़ कर इस में लिखे सुनहरी सिद्धान्तों को अपने हृदय की प्लेट पर लिख लीजिये और इस में वर्णित बातों पर आचरण कीजिये। फिर आप देखेंगे कि Struggle will become a melodious song अर्थात् संघष सुमधुर संगोत बन जायेगा, जिस Field क्षेत्र में आप बढ़ेंगे सफलता पांव चूम लेगी। सृष्टि का कणकण झुका निज माथ देगा। You will find light and life अर्थात् आप को प्रकाश एवं जीवन मिलेगा और आप बार बार चिल्ला उठेंगे (Eureka) मैं ने सफलता की कला

जान ली है, मैं ने सफलता के सुनहरी सिद्धान्त जान लिये हैं।

आप पुस्तक पढ़ने के पश्चात् और उस में वर्णित बातों पर आचरण करने के पश्चात् पटियाला के एक विद्यार्थी की आवाज से आवाज मिला कर कहे बिना नहीं रहेंगे :

जोश ज़िन्दगी वाला नस नस में ऐसा डाला,
इस जोश ने दे दी मुझे जान।
हाय रे लेखक! मैं तेरे कुर्बान।

Let strong and pure, high and noble healthy and happy thoughts come to us from every side.

या रब्ब ! ये इलतजा है,
करम तू अगर करे।
वो बात दे जबां पर,
जो दिल पर असर करे।

देव

कुछ प्रिंटर की ओर से :

मनोविज्ञान और योग द्वारा मनुष्य-मात्र की सफलता

प्रिय पाठक गण !

जैसा कि प्रत्येक प्रिंटर का फर्ज है कि हर पुस्तक को छापने से पहले पढ़े और समझे, उस के बाद छापे। इस आधार पर मैं ने "सफलता के सुनहरी सिद्धान्त" को हस्त-लिखित कापी को पढ़ा और मैं समझता हूं कि इस ज़माने में इस प्रकार की पुस्तक का छापना अति आवश्यक है और इस का निष्कर्ष भाव निम्नलिखित तीन भागों में इस प्रकार है :—

1. विचार शक्ति का बौद्धिक शक्ति पर प्रभाव।

2. दृढ़ विश्वास, दृढ़ संकल्प, आत्म विश्वास, प्रभु विश्वास, पुर्ण साहस और परिश्रम।
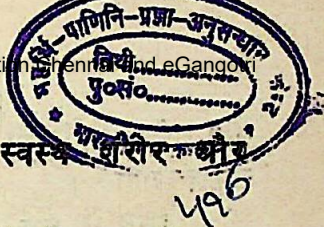
3. स्वस्थ मन, स्वस्थ शरीर और स्वस्थ बुद्धि।

इस पुस्तक के पढ़नें से आप को पता चलेगा कि जो शक्तियां प्रत्येक मनुष्य में छुपी हुई हैं इन को योग के द्वारा किस प्रकार से जागृत कर के लाभ उठाया जा सकता है इस विष्य पर प्रोफैसर साहब नें जिस सरलता और गम्भीरता से उच्च कोटि के महापुरुषों के जीवनों के उदाहरण दे कर प्रकाश डाला है, यह उन का आपना ही हिस्सा है।

यदि हम इस पुस्तक में योग के बारे में लिखत बातों को क्रियात्मिक रूप में धारण करें तब ही हमें लाभ हो सकता है। और योग ही एक मात्र परमात्मा से मिलने का साधन है।

हर जगह मोजूद है पर वे नज़र आता नहीं।
योग साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं।

इस लिये मैं समझता हूं कि प्रत्येक नर-नारी का यह कर्तव्य बन जाता है कि इस पुस्तक का अवश्य अध्ययन करके अपनी

सोई हुई शक्तियों को जगाये और जीवन को सफल बनाये।

अन्त में प्रभु से प्रार्थना है कि वे प्रो. देव को शक्ति दें कि वे इस प्रकार की पुस्तकें लिख कर मनुष्य-मात्र की अधिक से अधिक सेवा करते रहें।

देव राज खुल्लर,
मन्त्री— महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट
टंकारा सहायक समिति लुधियाना
तथा
उप-मन्त्री—
आर्य समाज, दाल बाजार, लुधियाना

मालिक:
दौलत प्रिंटिंग प्रैस व दौलत बक्स फैक्ट्री
गोकल रोड, लुधियाना
फान 684

आभार

यूं तो इस पुस्तक के निर्माण में मेरे बहुत से शुभ-चिन्तकों का योगदान है जिस के लिये मैं उन सभी का अभारी हूं। जहां मैं अपने जीवन-साथी श्रीमती 'कमल' का आभारी हूं, क्योंकि उन्हों ने इस हस्त लिखित कापी को Correct करने का कष्ट किया। वहां मैं अपने प्रिय मित्र वी. पी. शास्त्री जी का भी धन्यवादी हूं कि उन्हों ने मुझे इस पुस्तक को लिखने का प्रोत्साहन दिया, और हस्त लिखित कापी को पढ़ कर अपने उदगार प्रकट करने की अनुकम्पा की। मैं अपने प्रिय मित्र एवं भ्राता डा० देवेन्द्र जी तथा महेन्द्र जी का भी अभारी हूं जिन्हों ने मुझे सहयोग दिया। साथ में उनकी पूज्य माता जी का ऋणि हूं, जिन्हों ने मुझे मां का प्यार दिया। मैं श्री देव राज जी खुल्लर (मालिक दौलत प्रैस व बक्स फैक्टरी) का भी अत्यन्त अभारी हूं, जिन्हों ने स्वयं और उनके कर्मचारियों ने रात

दिन एक करके इस पुस्तक को प्रकाशित किया एवं इस पुस्तक को एक आकर्षक रूप देने में अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाया। देव राज जी खुल्लर का मैं यूं भी आभारी हूं कि उन्हों ने इस पुस्तक की हस्त लिखित कापी को बड़ी रुचि से पढ़ा। और इसके बारे में अपने विचार प्रकट किये।

अपने पूज्य धर्म-पिता सः इन्द्र सिंह का अत्यन्त ऋणि हूं, जो मुझे पिता का प्यार देकर मेरी सभी त्रुटियों की क्षमा करते रहते हैं।

आप सबका आभारी,
'देव'